15_sanjay_kumar_Layout 1 5/1/2014 4:10 PM Page 183

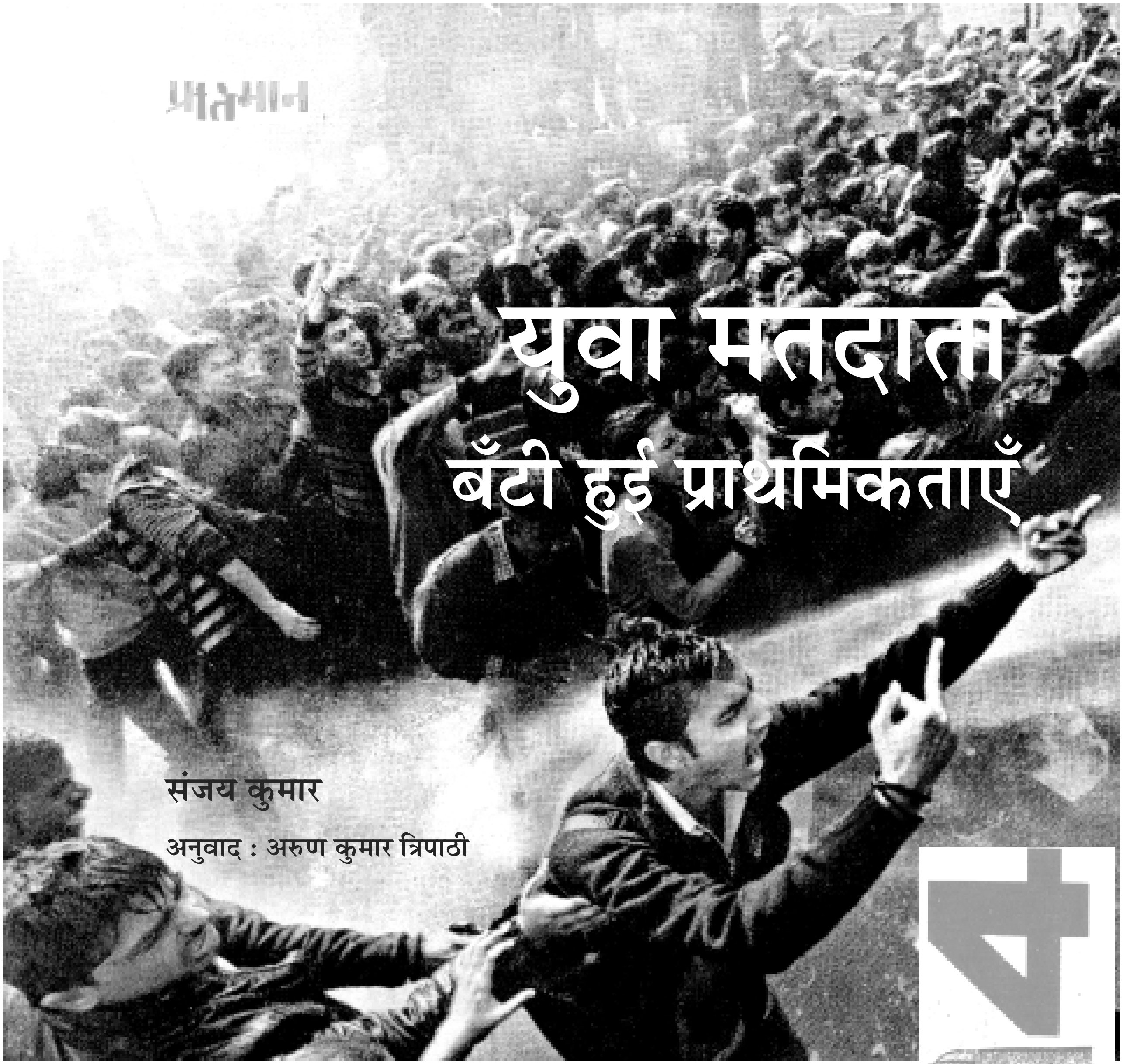

युवा मतदाता
बँटी हुई प्राथमिकताएँ

संजय कुमार

अनुवाद : अरुण कुमार त्रिपाठी

भारत में चुनावी राजनीति की चर्चा आम तौर पर राजनीतिक दलों के विभिन्न जातिगत रुझानों के सिलसिले में होती है और समझा जाता है कि पार्टियाँ जातियों की गोलबंदी के आधार पर काम करती हैं। मण्डल के बाद यह विचार-विमर्श अन्य पिछड़े वर्ग के मतदाताओं की गोलबंदी पर केंद्रित रहता था और हाल के वर्षों में दलितों की गोलबंदी पर भी बातचीत की जाने लगी है। इसके अलावा अब यह भी ग़ौर किया जाने लगा है कि क्या स्त्रियों का मत पुरुषों के मुक़ाबले एक भिन्न श्रेणी से ताल्लुक़ रखता है अर्थात् क्या अलग से स्त्री-वोट बैंक जैसा भी कुछ हो सकता है। अगर राष्ट्रीय स्तर पर न सही, तो क्या स्त्रियों का वोट उन राज्यों के स्तर पर रेखांकित किया जा सकता है जहाँ स्त्रियाँ शीर्ष पदों पर रही हैं, यहाँ तक कि उन्होंने मुख्यमंत्री पद भी सुशोभित किया है। इसी लिहाज़ से कुछ अध्ययनों में स्त्रियों के मतदान संबंधी रुझानों और भारतीय राजनीति में उनकी भूमिका पर रोशनी डाली गयी है। लेकिन, एक मतदाता-श्रेणी की तरह युवा वोटरों पर विशेषज्ञों का ध्यान न के बराबर ही गया है। 2009 के लोकसभा चुनावों और उसके बाद हुए विभिन्न राज्यों के विधानसभा चुनावों से पहले युवा भारतीय वोटर की चुनावी अध्ययन ने

15_sanjay_kumar_Layout 1 5/1/2014 4:10 PM Page 184

क्या भारत में ऐसा कोई युवा मतदाता है जिसके बारे में अलग से विधिपूर्वक सोच-विचार किया जाना चाहिए। ... एक श्रेणी के रूप में युवा होने की न्यूनतम परिभाषा के रूप में विद्वानों के बीच कोई आम राय नहीं है इसलिए अभी तक भारतीय युवा जैसी किसी श्रेणी का निर्धारण आसान नहीं है।

दिलचस्पी लेनी शुरू ही नहीं की थी। दरअसल, पंद्रहवीं लोकसभा के चुनावों के बाद इस तरह की चर्चा सामने आयी कि इस निर्वाचन में युवा उम्मीदवार बड़ी संख्या में इसलिए चुने गये है क्योंकि युवा मतदाताओं की संख्या ज़्यादा थी। मीडिया–विश्लेषण में यह बात बार–बार बताई गयी कि संसद में इस बार युवा सदस्य काफ़ी संख्या में चुन कर आये हैं। लेकिन पंद्रहवीं लोकसभा के सदस्यों की उम्र का एक सतर्क अध्ययन बताता है कि सदन में चालीस साल से कम उम्र के 79 युवा सदस्य थे और यह संख्या इससे पहले के सदन में मौजूद युवाओं से ज़्यादा नहीं थी। लेकिन दोनों सदनों के युवा सदस्यों की यह संख्यात्मक तुलना इस प्रश्न का जवाब नहीं दे सकती कि क्या भारत में ऐसा कोई युवा मतदाता है जिसके बारे में अलग से विधिपूर्वक सोच–विचार किया जाना चाहिए। यह लेख इस विश्लेषण का एक प्रयास है कि क्या भारत में युवा मतदाता जैसी कोई श्रेणी मौजूद है?

चूँकि एक श्रेणी के रूप में युवा होने की न्यूनतम परिभाषा के रूप में विद्वानों के बीच कोई आम राय नहीं है इसलिए अभी तक भारतीय युवा जैसी किसी श्रेणी का निर्धारण आसान नहीं है। इस मुश्किल के बावजूद भारतीय उपमहाद्वीप में युवाओं की बहुत बड़ी संख्या देखते हुए एक जनसंख्यामूलक श्रेणी के तौर पर उनकी अहमियत से इनकार नहीं किया जा सकता। भारत सरकार के युवा और खेल मामलों के मंत्रालय के अनुसार 13 से 35 वर्ष की उम्र के लोगों को युवा कहा जाता है। 2011 में इसी विभाग के तहत सक्रिय किशोर और युवा विकास संबंधी एक कार्यदल ने सुझाव दिया कि 18 से 30 वर्ष के बीच के लोग युवा समझे जाने चाहिए और 13 से 18 साल के बीच के लोगों को किशोर कहा जाना चाहिए। अगर भारत में बड़ी युवा आबादी है तो यह माना जा सकता है कि यहाँ 18 से 25 के बीच के युवा मतदाताओं की भारी संख्या होगी। हालाँकि राष्ट्रीय स्तर पर या विभिन्न राज्यों में युवाओं की आबादी के बारे में कोई सरकारी अनुमान उपलब्ध नहीं है, लेकिन हर चुनाव से पहले भारत का चुनाव आयोग आँकड़े जारी करता है कि भारत के किस राज्य की मतदाता सूची में कितने नये मतदाता जुड़े हैं।

इससे युवा मतदाताओं का तो अनुमान नहीं मिलता लेकिन इससे यह संकेत निश्चित तौर पर मिलता है कि कई सालों से युवाओं की आबादी बढ़ने के कारण युवा मतदाताओं की संख्या भी बढ़ रही है। राजनीति की तरफ़ ज़्यादा युवाओं को खींचने के लिए भारत सरकार ने एक पहल भी की है। 2011 से 25 जनवरी की तारीख़ राष्ट्रीय मतदाता दिवस के रूप में मनाई जाने लगी है। इसका मक़सद उन युवाओं का नाम मतदाता सूची में दर्ज कराना है जिन्होंने हाल ही में 18 साल पूरे किये हैं ताकि उन्हें मतदान प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया जा सके। चुनाव आयोग की तरफ़ से यह पहल महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इस बारे में चिंता जताई जा रही थी कि न केवल युवा मतदाताओं के नाम सूची में कम दर्ज हो रहे हैं, बल्कि पिछले कुछ दशकों में उनकी चुनावी भागीदारी भी कम दिख रही है। युवा मतदाताओं के बारे में अन्य चिंताएँ भी हैं। जैसे, एक तो युवजन कम मतदान करते हैं, दूसरे वे राज्य विधानसभाओं और संसद के लिए कम चुने जाते हैं और तीसरी बात यह है कि वे मतदान के समय विभिन्न राजनीतिक दलों के बीच विभाजित रहते हैं। बहरहाल, सोलहवीं लोकसभा के चुनावों के लिए हो रही प्रतियोगिता बताती है कि विभिन्न राजनीतिक दल युवा मतदाताओं की बड़ी आबादी

15_sanjay_kumar_Layout 1 5/1/2014 4:10 PM Page 185

पर नज़र गड़ाए हुए हैं। वे उन्हें अपनी ओर खींचना चाहते हैं। क्या राजनीतिक प्रतियोगिता का यह पहलू 2014 के लोकसभा चुनावों में युवा मतदाताओं की राजनीतिक भागीदारी के रुझानों में किसी क़िस्म की तब्दीली की जानकारी देने की तरफ़ ले जा सकता है?

हाल में गठित आम आदमी पार्टी समेत तक़रीबन सभी राजनीतिक दल यह सोचते हुए युवाओं को लामबंद करने की कोशिश कर रहे हैं कि वे मतदाता मण्डल के बड़े हिस्से का निर्माण करते हैं। कांग्रेस पार्टी ने मीडिया या चौराहों पर होर्डिंग के माध्यम से जो भी विज्ञापन या प्रचार अभियान चलाया है उसमें युवा मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए युवा कांग्रेस कार्यकर्ताओं के चेहरे लगाए गये हैं। कांग्रेस पार्टी और विशेषकर उसके नेता राहुल गाँधी चुनाव लड़ने के लिए पार्टी उम्मीदवार के तौर पर युवा चेहरों को आगे लाने की कोशिश कर रहे हैं। कांग्रेस की मुख्य प्रतिद्वंद्वी भारतीय जनता पार्टी भी इस मामले में कोई कसर नहीं छोड़ रही है। उसके प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेंद्र मोदी युवा मतदाताओं को आकर्षित करने की सभी कोशिशें कर रहे हैं। इस अभियान में क्षेत्रीय दल भी पीछे नहीं हैं। समाजवादी पार्टी की तरफ़ से अखिलेश यादव को मुख्यमंत्री बनाने का फ़ैसला इसी रणनीति का हिस्सा प्रतीत होता है। पर क्या इससे युवा मतदाताओं की राजनीतिक प्राथमिकताएँ प्रभावित हो रही हैं?

आम आदमी पार्टी समेत तक़रीबन सभी राजनीतिक दल यह सोचते हुए युवाओं को लामबंद करने की कोशिश कर रहे हैं कि वे मतदाता मण्डल के बड़े हिस्से का निर्माण करते हैं। ... पर क्या इससे युवा मतदाताओं की राजनीतिक प्राथमिकताएँ प्रभावित हो रही हैं?

सवाल यह है कि क्या पार्टियाँ युवा मतदाताओं को आगामी लोकसभा चुनावों में ज़्यादा भागीदारी के लिए प्रेरित कर सकती हैं और क्या 2014 के लोकसभा चुनावों में युव वोटर किसी पार्टी के लिए निर्णायक तौर पर मतदान कर सकते हैं? इस सवाल का जवाब देना तो लोकसभा चुनावों के बाद ही सम्भव होगा लेकिन 2013 के विधानसभा चुनावों और विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सी.एस.डी.एस.) की तरफ़ से हाल के महीनों में किये गये सर्वेक्षण से मिले संकेत बताते हैं कि युवाओं में एक हद तक ज़्यादा संख्या में वोट डालने के साथ-साथ उनकी राजनीतिक प्राथमिकता में एक परिवर्तन की प्रवृत्ति देखी गयी है, हालाँकि विधानसभा चुनाव के परिणामों से यह नहीं पता चलता कि युवा ज़्यादा वोट डाल रहे हैं और न ही यह पता चलता है कि दिल्ली में आम आदमी पार्टी (आप) को छोड़ कर उन्होंने किसी और पार्टी को अपनी प्राथमिकता दी है। लेकिन 2013 के विधानसभा चुनावों के बाद किये गये सर्वेक्षण से संकेत मिलते हैं कि युवा मतदाताओं में भाजपा के लिए प्राथमिकता पैदा हो रही है। शायद ऐसा इसलिए है कि उनमें भाजपा के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेंद्र मोदी के लिए आकर्षण है और वे बदलाव चाहते हैं। दिल्ली में हमने युवा मतदाताओं को बड़े पैमाने पर आप को वोट देते देखा और उसकी वजह अरविंद केजरीवाल के प्रति उनका आकर्षण और बदलाव का हिस्सा बनने की उनकी इच्छा है। लेकिन इस बहस में उतरने से पहले यह विश्लेषण करना ज़रूरी है कि क्या भारतीय चुनाव में किसी तरह का कोई युवा वोट बैंक है।

पिछले कुछ लोकसभा चुनावों में मतदान के आँकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि अन्य आयु वर्ग के मतदाताओं के मुक़ाबले युवाओं ने ज़्यादा संख्या में वोट नहीं दिये हैं। हर चुनाव में हुए औसत मतदान के मुक़ाबले युवाओं के वोट तक़रीबन पाँच प्रतिशत कम ही पड़े हैं। युवा गोलबंदी में बढ़ोतरी और चुनावों में उनकी सम्भावित ऊँची भागीदारी की शुरुआत उस समय हुई जब अन्ना हजारे ने भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन किया। यह असर उस समय और भी ज़्यादा दिखा जब आम आदमी पार्टी

का गठन हुआ। लेकिन मतदान के आँकड़ों का विश्लेषण बताता है कि अन्य राज्यों में युवाओं का मतदान औसत से कम ही रहा। सभी राज्यों में औसत मतदान 74 प्रतिशत था, जबकि युवा मतदाताओं ने 68 प्रतिशत वोट डाले यानी छह प्रतिशत कम। यह प्रवृत्ति दिल्ली, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और राजस्थान समेत सभी चारों राज्यों में देखी गयी। दिल्ली जैसे शहर में युवाओं में चुनाव के दौरान ज़्यादा उत्साह था लेकिन औसत के मुक़ाबले युवाओं ने चार प्रतिशत कम ही वोट डाले। इसमें कोई शक नहीं कि 2014 के लोकसभा चुनावों में युवा मतदाताओं की संख्या बड़ी है लेकिन यह कहना कठिन है कि आने वाले चुनाव में वे अतीत के मुक़ाबले ज़्यादा संख्या में मतदान करेंगे।

इसके अलावा यह जानना भी महत्त्वपूर्ण है कि युवा मतदाताओं की संख्या के बारे में जो आँकड़े उपलब्ध हैं वे भारत की जनगणना पर आधारित हैं, जबकि आबादी में उनकी संख्या और ज़्यादा हो सकती है। यह भी सम्भव है कि अपने क्षेत्र की मतदाता सूची में उनका पंजीकरण न हुआ हो। दरअसल दूसरे आयु वर्ग के मतदाताओं के मुक़ाबले न सिर्फ़ युवा मतदाताओं के वोट कम पड़ते हैं बल्कि दूसरों के मुक़ाबले उनका पंजीकरण भी कम है। यह एक अहम सवाल है कि क्या 2014 के चुनाव में चुनाव आयोग, राजनीतिक दल और राजनेता मिल कर युवाओं को पहले के चुनावों के मुक़ाबले बड़ी संख्या में लामबंद कर सकेंगे और क्या कोई राजनीतिक दल या नेता युवा मतदाताओं की एक बड़ी संख्या अपनी ओर खींच सकेगा?

2009 के चुनाव-परिणाम का विश्लेषण करने पर दिखता है कि कांग्रेस काफ़ी हद तक ख़ुद को युवाओं का प्रतिनिधित्व करने वाली पार्टी के रूप में प्रस्तुत करने में कामयाब रही थी, लेकिन

तालिका-1 : लोकसभा में युवाओं का मतदान : लोकसभा चुनाव (1996-2009)

मतदान की श्रेणी	1996	1998	1999	2004	2009
युवा मतदाता 18-25 वर्ष	54	63	57	52	54
अखिल भारतीय मतदान	58	62	60	58	58

नोट : सभी आँकड़े प्रतिशत में हैं। अखिल भारतीय मतदान के आँकड़े विभिन्न लोकसभा चुनावों के परिणामों के आधार पर हैं, जबकि युवा मतदाताओ के वोट देने का अनुमान सी.एस.डी.एस. की तरफ़ से किये गये चुनाव बाद के सर्वेक्षण पर आधारित है।

तालिका-2 : युवाओं के मतदान का प्रतिशत बढ़ा नहीं, बल्कि उन्होंने औसत मतदान के मुक़ाबले ज़्यादा कम संख्या में वोट दिया

राज्य	सकल मतदान	युवाओं का मतदान (18-25 वर्ष)
कुल	**74**	**68**
दिल्ली	66	62
छत्तीसगढ़	77	74
मध्य प्रदेश	73	67
राजस्थान	76	65

नोट : सभी आँकड़े प्रतिशत में। सकल मतदान के आँकड़े भारतीय चुनाव आयोग से लिए गये हैं, जबकि युवा मतदाताओं के वोट देने का अनुमान सी.एस.डी.एस. की तरफ़ से किये गये चुनाव बाद के सर्वेक्षण पर आधारित है।

15_sanjay_kumar_Layout 1 5/1/2014 4:10 PM Page 187

इसके बावजूद युवाओं ने उसके प्रति-उत्तर में अन्य दलों की तुलना में कांग्रेस के लिए साफ़ तौर पर प्राथमिकता नहीं जताई थी य न ही अतीत के मुक़ाबले कांग्रेस के लिए ज़्यादा मतदान किया था। यह कहना तो कठिन है कि अतीत के मुक़ाबले नब्बे के दशक और हाल के वर्षों में कांग्रेस ने अपना युवा वोट बैंक खोया है, लेकिन यह स्पष्ट है कि कांग्रेस को 1996 के लोकसभा चुनावों के बाद ग़ैर-युवा और अन्य मतदाताओं के मुक़ाबले बड़ी संख्या में युवाओं के वोट नहीं मिले। युवा मतदाताओं में कांग्रेस के वोटों का हिस्सा कमोबेश राष्ट्रीय स्तर जितना ही रहा। कुछ चुनावों में पार्टी को 34 वर्ष या उससे ऊपर की उम्र के मतदाताओं के वोट युवाओं के मुक़ाबले ज़्यादा मिले। दूसरी तरफ़, बावजूद इसके कि भाजपा युवा मतदाताओं में ज़्यादा लोकप्रिय नहीं है, ऊँची जाति और शहरी क्षेत्र के युवा मतदाताओं ने पिछले एक दशक में भाजपा की सफलता में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। हालाँकि भाजपा के कुल वोट घटकर 20 प्रतिशत से भी नीचे (18.8 प्रतिशत) आ गये, लेकिन भाजपा को ग़ैर-युवा मतदाताओं के मुक़ाबले युवा मतदाताओं के ज़्यादा वोट मिले। कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के युवा मानस में वामपंथी दलों (कम्युनिस्ट पार्टियों) के प्रति आकर्षण है, लेकिन राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर चुनावों में कुछ राज्यों को छोड़ कर युवा मतदाता वामपंथी दलों को बड़े पैमाने पर वोट देते हुए नहीं लगते।

अध्ययनों से पता चलता है कि वामपंथी दलों को वरिष्ठ मतदाताओं की तुलना में युवाओं के वोट ज़्यादा नहीं मिलते। युवा और अन्य मतदाताओं के बीच वामपंथी वोटों के हिस्से में कोई फ़र्क़ नहीं है। पिछले कुछ चुनावों में बसपा के वोटों का प्रतिशत राष्ट्रीय स्तर से लेकर राज्य विधानसभा चुनावों (विशेषकर उत्तर प्रदेश) में बढ़ा है लेकिन ऐसा इसलिए नहीं है कि युवाओं ने बसपा को ज़्यादा वोट दिये हों। अध्ययनों से पता चलता है कि बसपा का जनाधार युवा और अन्य मतदाताओं में समान रूप से बढ़ रहा है। हालाँकि वह अन्य समुदाय के युवकों के मुक़ाबले दलित युवकों में ज़्यादा केंद्रित है।

हमारा सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य कुछ हद तक भारत-भर में और काफ़ी हद तक दिल्ली में बदला है। भ्रष्टाचार के विरुद्ध अन्ना हजारे के आंदोलन ने दिल्ली में बड़ी संख्या में और कुछ अन्य शहरों में भी युवाओं को बड़े पैमाने पर आकर्षित किया है। भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन से निकली आम आदमी पार्टी की रीढ़ के तौर पर युवा ही रहे हैं। आप ने दिल्ली का चुनाव सफलतापूर्वक लड़ा और सरकार भी बनायी। सी.एस.डी.एस. की तरफ़ से किये गये चुनाव सर्वेक्षण बताते हैं कि दिल्ली के युवा मतदाताओं ने आप को बड़े पैमाने पर वोट दिया। हालाँकि आप को कुल 29 प्रतिशत वोट मिले, लेकिन उसे वोट देने वाले युवाओं का आँकड़ा 36 प्रतिशत रहा। आप का औसत जनाधार जितना रहा, उसके मुक़ाबले युवाओं में उसका समर्थन 6-7 प्रतिशत ज़्यादा रहा। लेकिन, आप की सफलता के साथ क्या हम यह मान सकते हैं कि अन्य उम्र के मतदाताओं की तरह विभिन्न राजनीतिक दलों में युवाओं के विभाजन की कहानी अब पुरानी हो चुकी है और हम एक ऐसे चुनाव की ओर बढ़ रहे हैं जहाँ निर्णायक रूप से वे किसी एक पार्टी के लिए वोट करेंगे?

सी.एस.डी.एस. की तरफ़ से किये हाल के सर्वेक्षणों के परिणाम संकेत देते हैं कि कई राज्यों में भाजपा युवाओं के लिए प्राथमिकता है, पर ऐसा 2013 में हुए दिल्ली या अन्य राज्यों के विधानसभा चुनावों में नहीं दिखा। आँकड़ों का विश्लेषण बताता है कि भाजपा ने राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव जीता और वोट प्रतिशत से लेकर सीटों के आँकड़ों तक अगुआ पार्टी रही, लेकिन युवा मतदाताओं ने भाजपा को बड़े पैमाने पर वोट नहीं दिया। वे सभी राज्यों में कांग्रेस और भाजपा के बीच विभाजित रहे। राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीगढ़ में भाजपा के वोटों का प्रतिशत युवाओं समेत सभी आयु वर्ग के मतदाताओं में बढ़ा, लेकिन युवा मतदाताओं के बीच भाजपा के जनाधार में कोई ख़ास बढ़ोतरी नहीं हुई। कांग्रेस की तरह ही भाजपा के मतों का हिस्सा युवाओं में उसके औसत के मुक़ाबले थोड़ा सा कम ही रहा।

सिर्फ़ आप पार्टी ऐसी रही जिसने अपने दायरे में युवा मतदाताओं को आकर्षित किया। सवाल यह है कि अगर आप पार्टी अन्य राज्यों में चुनाव लड़ती है तो क्या यह दिल्ली की ही तरह से युवाओं को अपने दायरे में आकर्षित करने में कामयाब होगी?

पिछले पाँच लोकसभा चुनावों में कांग्रेस को आम तौर पर युवाओं के मुक़ाबले उन मतदाताओं के ज़्यादा वोट मिले जिनकी उम्र 34 साल से ज़्यादा की थी, हालाँकि अन्य वोटरों के मुक़ाबले युवा

तालिका-3 : युवा मतदाताओं के बीच शायद ही कोई दल फ़ायदे की स्थिति में है

पार्टियाँ	1996			1998			1999			2004			2009		
	सारे वोटर	युवा	अन्य	सारे वोटर	युवा	अन्य	सारे मतदाता	युवा	अन्य	सारे वोटर	युवा	अन्य	सारे वोटर	युवा	अन्य
कांग्रेस	28.8	28	30	25.8	25	26	26.3	27	29	26.5	27	26	26.6	28	29
भाजपा	20.3	22	19	25.6	26	26	23.8	26	23	22.2	23	22	18.8	20	18
वाम दल	9.1	9	9	7.79	9	7	7.6	8	8	7.9	8	8	7.5	7	8
बसपा	4	3	4.7	4	5	4.2	5	4	5.3	5	6	6	6.2	6	6

नोट:- सभी आँकड़े प्रतिशत में। स्रोत : सी.एस.डी.एस. की तरफ़ से लोकसभा चुनावों के दौरान एनईएस सर्वे। नोट:- वोट शेयर डाटासेट की तुलना में रखे गये हैं।

तालिका-4 : औसत के मुक़ाबले युवा मतदाताओं के बीच पार्टियों का हिस्सा : विधानसभा चुनाव (2013)

राज्य	कांग्रेस		भाजपा		अन्य/आप	
	वोटों का औसत हिस्सा	18-25 साल के वोट	वोटों का औसत हिस्सा	18-25 साल के वोट	वोटों का औसत हिस्सा	18-25 साल के वोट
कुल	35	33	43	42	17	21
दिल्ली	25	19	34	32	29	36
छत्तीसगढ़	40	41	41	39	15	17
मध्य प्रदेश	36	37	45	43	14	19
राजस्थान	33	30	43	42	17	21

नोट:-सभी आँकड़े प्रतिशत में। सकल मतदान के आँकड़े भारतीय चुनाव आयोग से लिए गये हैं, जबकि युवा मतदाताओ के वोट देने का अनुमान सी.एस.डी.एस. की तरफ़ से किये गये चुनाव बाद के सर्वेक्षण पर आधारित हैं।

तालिका-5 : युवा मतदाताओं में भाजपा की तरफ़ कुछ झुकाव के संकेत

आयु वर्ग	कांग्रेस		भाजपा		अन्य पार्टियाँ	
	जुलाई, 2013 का अनुमान	जनवरी,2014 का अनुमान	जुलाई, 2013 का अनुमान	जनवरी, 2014 का अनुमान	जुलाई, 2013 का अनुमान	जनवरी, 2014 का अनुमान
18-25 वर्ष	26	23	28	38	46	39
26-35 वर्ष	26	26	28	35	46	39
36-45 वर्ष	28	26	28	35	44	39
46-55 वर्ष	29	28	32	32	44	40
56 वर्ष या और	30	31	25	29	45	40
अखिल भारतीय	28	27	27	34	45	39

नोटः-सभी आँकड़े प्रतिशत में। आँकड़ों का अनुमान सी.एस.डी.एस. की तरफ़ से किये गये सर्वेक्षण पर आधारित।

मतदाताओं में कांग्रेस के वोट का अनुपात थोड़ा ज़्यादा है। लेकिन कांग्रेस के युवा मतदाताओं के बीच कांग्रेस के वोटों में जेण्डर का अंतर बहुत ज़्यादा है। राष्ट्रीय चुनाव-अध्ययन के नतीजे बताते हैं कांग्रेस युवा पुरुषों के मुक़ाबले युवा स्त्रियों में ज़्यादा लोकप्रिय रही है। दूसरे शब्दों में युवा महिलाओं ने युवा पुरुषों के मुक़ाबले कांग्रेस को थोड़े ज़्यादा अनुपात में वोट दिये। लेकिन 2009 के लोकसभा चुनावों के दौरान युवा महिलाओं में कांग्रेस ने यह बढ़त खो दी। भाजपा को हमेशा युवा महिलाओं के मुक़ाबले युवा पुरुषों में ज़्यादा वोट मिले। अगर कांग्रेस को युवा पुरुषों के मुक़ाबले युवा स्त्रियों में मिली बढ़त खो गयी तो भाजपा की भी युवा स्त्रियों के मुक़ाबले युवा पुरुषों में मिली बढ़त गायब हो गयी। युवा स्त्रियों के मुक़ाबले युवा पुरुषों में भाजपा को 1996 में जो 6 प्रतिशत की बढ़त थी वह 2004 के लोकसभा चुनावों में घट कर 2 प्रतिशत रह गयी और 2009 के चुनावों में आंशिक तौर पर महज़ एक प्रतिशत बढ़ी।

यह प्रवृत्ति हाल के वर्षों में ज़्यादा नहीं बदली है। युवा महिलाओं के मुक़ाबले युवा पुरुषों में कांग्रेस ज़्यादा लोकप्रिय है, लेकिन भाजपा ने युवा महिला मतदाताओं में अपनी लोकप्रियता बढ़ाई है। हम न सिर्फ़ सभी आयु वर्ग के पुरुष मतदाताओं में भाजपा की तरफ़ झुकाव देख रहे हैं बल्कि भाजपा की तरफ़ युवाओं का झुकाव उल्लेखनीय है। जनवरी में किये गये सर्वेक्षण के अनुमान बताते हैं कि उनकी प्रवृत्ति भाजपा को वोट देने की तरफ़ है, जो कि जुलाई 2013 के सर्वे के अनुमान के मुक़ाबले 14 प्रतिशत ज़्यादा है।

मतदाताओं की मतदान-प्रवृत्ति पर उनके परिवेश या उस इलाक़े का असर ज़रूर पड़ता है जहाँ

तालिका-6 : युवा स्त्रियों में युवा पुरुषों में भाजपा की तरफ़ खिसकने की प्रवृत्ति

	कांग्रेस		भाजपा	
	जुलाई, 2013	जनवरी, 2014	जुलाई, 2013	जनवरी, 2014
सारी महिलाएँ	28	28	26	31
युवा महिलाएँ	27	26	26	33
सभी पुरुष	27	26	29	36
युवा पुरुष	25	20	28	42

नोट : सभी आँकड़े प्रतिशत में। आँकड़ों का अनुमान सी.एस.डी.एस. की तरफ़ से किये गये सर्वेक्षण पर आधारित।

15_sanjay_kumar_Layout 1 5/1/2014 4:10 PM Page 190

वे रह रहे होते हैं और यह बात युवा मतदाताओं के बारे में भी सही है। गाँव में रहने वाले युवा छोटे शहरों और क़स्बों में रहने वाले युवाओं के मुक़ाबले अलग तरह से वोट करते हैं। वास्तव में हम युवा स्त्रियों और युवा पुरुषों की मतदान-प्रवृत्ति में जितना फ़र्क़ देखते हैं उससे ज़्यादा फ़र्क़ गाँव और शहर के युवा मतदाताओं की मतदान-प्रवृत्ति में होता है। 1996 से युवाओं की मतदान-प्रवृत्ति के अध्ययन से पता चलता है कि ग्रामीण युवा कांग्रेस के पक्ष में स्पष्ट तौर पर ध्रुवीकृत है, जबकि शहरी युवा भाजपा के पक्ष में झुका हुआ है। पिछले कई चुनावों में शहरी युवाओं में गाँव के युवाओं के मुक़ाबले भाजपा को वोट देने का रुझान ज़्यादा रहा है। इस तथ्य से कोई हैरानी भी नहीं होनी चाहिए क्योंकि भाजपा को ग्रामीण मतदाताओं के मुक़ाबले शहरी मतदाताओं का समर्थन ज़्यादा मिलता रहा है। 1990 के दशक में भाजपा की चुनावी सफलता का श्रेय बहुत कुछ शहरी युवाओं के ज़बरदस्त समर्थन को दिया जा सकता है। 1996, 1998, 1999 के लोकसभा चुनावों में शहरी युवाओं ने भाजपा को बड़े पैमाने पर वोट दिया।

शहरी युवाओं का यह समर्थन भाजपा को 2004 के लोकसभा चुनावों तक मिलता रहा लेकिन उसके बाद पार्टी की लोकप्रियता शहरी युवाओं में घट गयी। शहरी युवाओं ने भाजपा का साथ छोड़कर विभिन्न राज्यों में क्षेत्रीय दलों का दामन पकड़ लिया। हालाँकि कांग्रेस के नेता राहुल गाँधी ने युवाओं को राजनीति में ज़्यादा भागीदारी के लिए प्रेरित करने का प्रयास किया लेकिन कांग्रेस 2009 के चुनावों में शहरी युवाओं का ज़्यादा समर्थन नहीं जुटा सकी। वामपंथी पार्टियों को शहरी युवाओं के मुक़ाबले ग्रामीण युवाओं में ज़्यादा समर्थन हासिल हुआ। हालाँकि 2004 इसका अपवाद रहा जब इन पार्टियों को शहरी युवाओं का ज़्यादा समर्थन मिला। एक तरह से वामपंथी दलों को 2004 के चुनावों में जो उल्लेखनीय सफलता मिली उसका श्रेय शहरी युवाओं में उसके बढ़े समर्थन को दिया जाना चाहिए। जहाँ तक बसपा का सवाल है तो पिछले एक दशक में इसका जनाधार ग्रामीण और शहरी युवाओं में बढ़ा है। इसी के साथ इसका जनाधार शहरी युवाओं के मुक़ाबले ग्रामीण युवाओं में हमेशा ज़्यादा रहा है।

हाल के वर्षों में युवा मतदाताओं की चुनावी प्राथमिकता काफ़ी कुछ बदली है। हमने देखा कि ग्रामीण युवा और छोटे क़स्बों और बड़े शहरों में रहने वाले युवा मतदाता, दोनों भाजपा की तरफ़ खिसके हैं। उनका यह रुझान जुलाई, 2013 तक नहीं देखा गया था। लेकिन हमने देखा कि पिछले छह महीनों में युवा मतदाताओं ने उल्लेखनीय रूप से भाजपा की ओर अपना रुख किया है। महत्त्वपूर्ण यह है कि गाँव और शहर दोनों जगहों के युवाओं में भाजपा की तरफ़ रुझान देखा गया है, लेकिन ग्रामीण युवाओं में यह रुझान शहरी युवाओं के मुक़ाबले ज़्यादा है। चुनाव के कुछ महीने पहले युवाओं में इस तरह का रुझान एकदम स्पष्ट है लेकिन हमें यह देखना होगा कि क्या यह रुझान जारी रहता है या आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय स्तर पर अपना अभियान शुरू करने के बाद इसमें कोई बदलाव आता है।

तालिका-7 : शहरी युवाओं में भाजपा का घटता मत प्रतिशत

	1996		1998		1999		2004		2009	
पार्टियाँ	**ग्रामीण युवा**	**शहरी युवा**	**ग्रामीण युवा**	**शहरी युवा**	**ग्रामीण युवा**	**शहरी युवा**	**ग्रामीण युवा**	**शहरी युवा**	**ग्रामीण युवा**	**शहरी युवा**
कांग्रेस	27	29	25	26	27	28	26	30	27	28
भाजपा	20	28	24	32	25	28	22	22	20	20

नोट : सभी आँकड़े प्रतिशत में। स्रोत : लोकसभा चुनावों के दौरान सी.एस.डी.एस. की तरफ़ से राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन।

15_sanjay_kumar_Layout 1 5/1/2014 4:10 PM Page 191

तालिका-8 : ग्रामीण युवाओं में शहरी युवाओं के मुक़ाबले भाजपा की तरफ़ खिसकने के ज़्यादा संकेत हैं

	कांग्रेस		भाजपा	
	जुलाई, 2013	जनवरी, 2014	जुलाई, 2013	जनवरी, 2014
सारे ग्रामीण	27	26	25	34
ग्रामीण युवा	25	22	27	39
सभी शहरी	29	30	33	34
शहरी युवा	31	24	29	36

नोट : सभी आँकड़े प्रतिशत में। आँकड़ों का अनुमान सी.एस.डी.एस. की तरफ़ से किये गये सर्वेक्षण पर आधारित।

कम से कम पिछले दशक या उसके आसपास भारतीय युवाओं की मतदान प्रवृत्ति तय करने में उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का स्तर महत्त्वपूर्ण कारक रहा है। कांग्रेस और भाजपा को मिली चुनावी सफलता या विफलता के बावजूद निरक्षर युवा मतदाता हमेशा भाजपा के मुक़ाबले कांग्रेस की तरफ़ ज़्यादा आकर्षित होते रहे हैं जबकि कॉलेज में पढ़े युवा मतदाताओं के संदर्भ में भाजपा की हमेशा कांग्रेस पर बढ़त रही है। हालाँकि 1998 और 1999 के लोकसभा चुनावों में कांग्रेस ने अच्छा प्रदर्शन नहीं किया और उसके कुल वोटों का प्रतिशत बुरी तरह से गिरा, इसके बावजूद अनपढ़ युवाओं में भाजपा के मुक़ाबले कांग्रेस अभी भी ज़्यादा लोकप्रिय है। इसी तरह हालाँकि 1998 के लोकसभा चुनावों में 25.6 प्रतिशत वोट पाने वाली भाजपा का मत प्रतिशत 2004 में तेज़ी से घटकर 22.2 प्रतिशत पर आ गया, लेकिन कॉलेज में पढ़े मतदाताओं में कांग्रेस के मुक़ाबले भाजपा की बढ़त आज भी ज़्यादा है। कांग्रेस पर उसकी बढ़त 2009 के चुनावों में कम ज़रूर हुई पर वह भी हल्की सी।

पिछले पाँच लोकसभा चुनावों में कॉलेज के पढ़े युवाओं के मुक़ाबले अशिक्षित युवाओं में कांग्रेस को ज़्यादा वोट मिले। यह बात 34 वर्ष से ऊपर के अनपढ़ मतदाताओं की प्रवृत्ति से भी मेल खाती है क्योंकि वे भी भाजपा के मुक़ाबले कांग्रेस को वोट देने की तरफ़ ज़्यादा प्रवृत्त होते हैं। हालाँकि कांग्रेस को अभी भी कॉलेज में पढ़े युवाओं के मुक़ाबले अशिक्षित युवाओं के ज़्यादा वोट मिलते हैं लेकिन कॉलेज पढ़े युवाओं और अशिक्षित युवाओं में कांग्रेस को मिलने वाले वोटों का अंतर कम हुआ है। क्योंकि पिछले कुछ वर्षों में कॉलेज पढ़े युवाओं में कांग्रेस को वोट देने की प्रवृत्ति में थोड़ी बढ़ोतरी हुई है। अगर हम 1999 के चुनाव को छोड़ दें तो 1996 से 2009 के बीच अशिक्षित युवाओं में कांग्रेस की तरफ़ बमुश्किल किसी तरह का कोई रुझान विकसित हुआ है। अशिक्षित युवाओं के मुक़ाबले शिक्षित युवाओं के बीच भाजपा पिछले पाँच लोकसभा चुनावों में ज़्यादा लोकप्रिय रही है। इसके बावजूद शिक्षित युवाओं में जहाँ 1996 में पार्टी को 40 प्रतिशत वोट मिले थे, वहीं 2009 में उनका प्रतिशत गिर कर 24 प्रतिशत के निम्न स्तर पर आ गया। जहाँ तक बसपा का सवाल है तो पिछले सभी पाँच लोकसभा चुनावों में पार्टी कॉलेज पढ़े युवाओं के मुक़ाबले अशिक्षित युवाओं में ज़्यादा लोकप्रिय थी। लेकिन कुछ वर्षों में यह अंतर घटा है।

कुल मिलाकर हम शैक्षणिक उपलब्धियों के विभिन्न स्तरों पर रह रहे युवाओं की राजनीतिक प्राथमिकता में कोई बड़ा बदलाव नहीं देख रहे हैं। कांग्रेस को अभी भी शिक्षित युवाओं के मुक़ाबले अशिक्षित युवाओं के ज़्यादा वोट मिलते हैं। लेकिन पिछले कुछ महीनों में शिक्षित युवाओं में भाजपा

15_sanjay_kumar_Layout 1 5/1/2014 4:10 PM Page 192

की तरफ़ प्रमुख झुकाव देखा गया है। शिक्षित युवाओं की तरह स्कूल तक पढ़े युवकों में भी भाजपा की तरफ़ झुकाव देखा गया है। भाजपा के प्रति अशिक्षित युवाओं के मुक़ाबले कॉलेज में पढ़े युवाओं में ज़्यादा आकर्षण है। यहाँ तक कि स्कूल तक पढ़े युवाओं की भी बड़ी आबादी में भाजपा के प्रति झुकाव देखा गया है। हमने मिडिल पास युवकों में भी भाजपा की तरफ़ झुकाव देखा है। हालाँकि यह बात स्पष्ट नहीं है कि भाजपा की तरफ़ यह झुकाव पार्टी के नाते है या नरेंद्र मोदी के नेतृत्व के नाते।

तालिका-9 : शिक्षित युवाओं में भाजपा का मत प्रतिशत तेज़ी से घटा है

	1996		1998		1999		2004		2009	
	निरक्षर युवा	कॉलेज पढ़े युवा	निरक्षर युवा	कॉलेज पढ़े युवा	निरक्षर युवा	कॉलेज पढ़े युवा	निरक्षर युवा	कॉलेज पढ़े युवा	निरक्षर युवा	कॉलेज पढ़े युवा
कांग्रेस	30	23	28	21	35	23	29	25	29	25
भाजपा	19	38	21	40	18	36	21	30	18	24
वामपंथी	10	8	7	7	7	6	6	6	7	6
बसपा	7	2	6	3	6	3	9	3	8	5

नोट : सभी आँकड़े प्रतिशत में। आँकड़ों का अनुमान सी.एस.डी.एस. की तरफ़ से किये गये सर्वेक्षण पर आधारित।

तालिका-10 : अशिक्षित युवाओं के मुक़ाबले शिक्षित युवाओं में भाजपा की तरफ़ ज़्यादा झुकने के संकेत हैं

	कांग्रेस		भाजपा	
	जुलाई, 2013	जनवरी, 2014	जुलाई, 2013	जनवरी, 2014
अशिक्षित युवा	26	25	19	26
प्राइमरी स्कूल पास	28	28	24	33
हाई स्कूल पास	28	26	24	38
ग्रेजुएट या आगे	24	18	34	43

नोट : सभी आँकड़े प्रतिशत में। आँकड़ों का अनुमान सी.एस.डी.एस. की तरफ़ से किये गये सर्वेक्षण पर आधारित।

1996 से हुए सभी पाँच लोकसभा चुनावों के दौरान भाजपा अशिक्षित युवाओं के मुक़ाबले शिक्षित युवाओं में ज़्यादा लोकप्रिय रही है। इसकी मुख्य वजह युवाओं की शिक्षा की उपलब्धि से ज़्यादा उनकी उम्र रही है। 1996 और 1998 के लोकसभा चुनावों के दौरान समान शैक्षणिक स्तर के लोगों में भाजपा अन्य के मुक़ाबले युवा मतदाताओं के बीच फ़ायदे में रही है। इसका मतलब यह है कि अगर युवा और अधेड़ उम्र के मतदाताओं की शिक्षा समान है तो उसमें युवाओं में भाजपा को वोट देने की प्रवृत्ति ज़्यादा देखी गयी। लेकिन शिक्षित युवाओं के बीच भाजपा को मिली यह बढ़त गुम हो गयी। 2004 और 2009 के लोकसभा चुनावों के दौरान युवा मतदाताओं के मुक़ाबले अन्य शिक्षित लोगों ने भाजपा को ज़्यादा संख्या में वोट दिया।

निष्कर्ष

अगर हम भारतीय युवाओं की शैक्षणिक भागीदारी की प्रवृत्ति पर नज़र डालेंगे तो यह कहना बहुत मुश्किल होगा कि भारत में युवा वोट जैसा कुछ है। लेकिन हाल के रुझान बताते हैं कि राजनीति और राजनीतिक मुद्दों के साथ युवाओं का जुड़ाव हो रहा है। सवाल यह है कि जिस तरह हम विभिन्न जाति समूहों की तरह युवाओं की कोई राजनीतिक श्रेणी उभरते हुए क्यों नहीं देख रहे हैं? इसके कई कारण हो सकते हैं। पहला कारण यह है कि युवा किसी एक श्रेणी में सीमित नहीं हैं। वे स्त्रियों की तरह ही विभिन्न क्षेत्रों में समान रूप से विभाजित हैं। जब भी हम किसी समुदाय को किसी पार्टी के वोट बैंक के तौर पर देखते हैं, या कोई पार्टी किसी समुदाय को अपने साथ लामबंद करना चाहती है तो कुल मतदाताओं के बीच उस समुदाय का हिस्सा या उसकी संख्या महत्त्वपूर्ण हो जाती है। हालाँकि यह कहना कठिन है कि किसी समुदाय का वोट बैंक बनने या पार्टियों द्वारा लामबंद किये जाने के लिए कितना बड़ा आकार होना चाहिए, लेकिन निश्चित तौर पर उन्हें सभी श्रेणियों में समान रूप से फैले नहीं रहना चाहिए। विभिन्न श्रेणियों में उनका फैलाव विषम होना चाहिए ताकि वे किसी एक श्रेणी या समुदाय के मुक़ाबले कहीं पर अपने को अल्पसंख्यक महसूस कर सकें। ऐसी स्थिति में किसी पार्टी के लिए उनके भीतर दूसरे समुदाय के प्रति असुरक्षा की भावना पैदा कर उन्हें लामबंद करना आसान होता है। चूँकि युवाओं के साथ ऐसा नहीं है इसलिए उन्हें लामबंद करने के लिए न तो कोई पार्टी आगे आयी, और न ही युवाओं ने किसी पार्टी से जुड़ने में विशेष रुचि दिखाई। दूसरा कारक जो किसी पार्टी को किसी समूह को लामबंद करने में सक्षम बनाता है वह है किसी समूह के लिए सामाजिक या आर्थिक तौर पर विशेष फ़ायदे वाले पैकेज की घोषणाएँ। कम से कम अतीत में राजनीतिक दल युवाओं के लिए ऐसा करने में विफल रहे हैं। यही वजह है कि हम किस पार्टी विशेष के लिए युवाओं को उस तरह लामबंद होते हुए नहीं देखते जिस तरह कुछ राज्यों में कुछ जातियों के लिए देखते हैं।

लेकिन अब पार्टियाँ देख रही हैं कि संख्या के लिहाज़ से युवा एक बहुत बड़ी शक्ति हैं, इसलिए वे अपनी पार्टी के लिए उन्हें लामबंद करने का विशेष प्रयास कर रहे हैं। भले ही युवाओं को विशेष फ़ायदा देने वाली योजनाओं की घोषणाएँ नहीं की जा रही हैं, पर कम से कम उनकी ज़्यादा चुनावी भागीदारी सुनिश्चित करते हुए उन्हें चुनाव लड़ने के लिए टिकट देने के माध्यम से तो ऐसा किया ही जा रहा है। हाल के महीनों में युवाओं को लामबंद किये जाने की प्रवृत्ति में कुछ परिवर्तन देखा गया है। सर्वेक्षण में यह दिखाई पड़ रहा है लेकिन युवा अभी भी विभाजित हैं। निश्चित रूप से युवाओं की संख्या बहुत बड़ी है और हो सकता है कि 2009 में कांग्रेस को मिले कुल वोटों से भी ज़्यादा हो, लेकिन युवाओं के वोटों के आधार पर चुनाव जीतने या हारने पर अतिरिक्त ज़ोर दिया जाना भ्रामक हो सकता है। आख़िरकार करीब 12 करोड़ से ज़्यादा युवा मतदाता किसी एक पार्टी को वोट देने नहीं जा रहे हैं। वे दो या तीन पार्टियों में विभाजित न हो कर विभिन्न दलों में बँटेंगे।

राजे सिंधिया
ELIXIR
IIT-JEE/AIEEE
MOMENTUM
यशोधरा राजे सिंधिया